|Mr. Deputy Chairman in the Chair.]

THE INDIAN COINAGE (AMENDMENT) BILL, 1975

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHR1MAT1 SUSHI LA ROHATGI) : Sir, I beg to move :

> "That the Bill further to amend the Indian Coinage Act, 1906, as passed by the I.ok Sabha, be taken into consideration."

Sir, under section 6 of the Indian Coinage Act, 1906, the Central Government have power to mint coins of such denominations not higher than 100 rupees, as the Government may, by notification in the official gazette, determine.

It is proposed to remove this denominational restriction and to permit the minting of coins of the denomination of 1000 rupees.

Minting of high denomination commemorative coins has recently become *a* big numismatic attraction. Several countries are issuing coins of the denomination of $ 125 (equivalent to Rs. 1,000 approximately) as participants to commemorative series sponsored by the International Union for Conservation of Nature and Natural Resources and the World Wild Life Fund. The preference *of* collectors of coins for high denominations render these coins highly attractive from the foreign exchange point of view.

India has been in the market of commemorative coinage issues from 1969 and has been selling coins of the denominations of Rs, 10, Rs. 20 and Rs. 50 in the international numismatic markets in sets of uncirculated quality and sets of proof quality. The foreign exchange earned from the sale of these uncirculated sets or proof sets has gone up from $ 62,715 in 1969 *to* S 135,650 in 1974.

For obvious reasons a commemorative coin has to be different from the existing coinage. It is also advantageous if it is of a higher value than the normal coins since such a coin is likely to command a better sale price abroad.

The present intention is to issue coins of denominations higher than 100 rupees only on special occasions.

As proposals received from the World Wild Life Fund, F.A.O., etc. involve minting of coins of higher denominations than 100 rupees, it is considered necessary to remove the existing restriction contained in section 6 of the Act so as to enable India's participation in international issues.

The Bill mainly seeks to achieve this object.

I commend this Bill to the House. *The question was proposed.*

श्री गुणानन्द ठाकुर (बिहार) : उपसभापति जी, हमारे वित्त मंत्री जी ने जो भारतीय सिक्का निर्माण अधिनियम, 1906 संशोधन करने के लिये विधेयक प्रस्तुत किया है मैं इसका समर्थन करता हूं। 1906 का जो एक्ट है इसमें संशोधन की तो जरूरत है ही क्योंकि अब हम 1975 में कहीं के कहीं पहुच गये हैं, स्थिति कितनी ही बदल गई है और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में भी परिवर्तन आ गया है। स्वाभाविक रूप से हमें इस आर्थिक युग के अनुसार चलना चाहिये। इसी दृष्टिकोण से जहां तक मैं समझता हूं यह संशोधन विधेयक लाया गया है इसलिये मैं इसका स्वागत करता हूं। इसमें शक नहीं कि इससे फौरन एक्सचेंज में भी बढ़ोतरी होगी।

मैं वित्त मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि हम लोगों से आप भले ही अधिकार ले लीजिये, हम लोगों से समर्थन ले लीजिये लेकिन यह जो सिक्का आप बनायेंगे उस सिक्के का उपयोग उपसभापति जी, बाढ़ के सिलसिले में गरीबों के हित के लिये होना चाहिये।

मैंने मंत्री जी से कहा था कि फ्लड पर डिबेट होनी चाहिये। क्योंकि आप जानते हैं कि उत्तर पूर्वी इलाका बाढ़ से दबा हुआ है। मेरा दुबारा कहना है कि आप जो सिक्का निकालें

[श्री गुणानन्द ठाकुर]

उस सिक्के का उपयोग बाढ़ पीड़ितों के लिये पहले करें। उपसभापति जी, पंजाब में पहले कभी बाढ़ नहीं आती थी, हमने पंजाब में कभी बाढ़ का नाम नहीं सुना था ; परन्तु अब की बार तो क्या पंजाब और क्या हरियाणा सब में बाढ़ आ गई है और करीब 10-10, 15-15 गांव बाढ़ से डूब गये हैं। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश, बिहार, आसाम, उत्तरी बंगाल आदि में तो हर वक्त बाढ़ आई रहती है। शंका बनी रहती है कि कब क्या होगा। हर वक्त यही डर लगता है कि हमारा गांव अब डूबा। रोज तार आता है, खत आता है यही लिखा होता है कि आज डूबा, कल डूबा। यह प्रलय का दृश्य है। कल हमने ट्रंककाल की थी तो वहां से खबर मिली कि ऐसी भयानक बाढ़ कभी नहीं आई। चम्पारन, दरभंगा, समस्तीपुर और मधुबन इलाकों की भी यही स्थिति है उपसभापति जी, देवरिया, गोरखपुर की भी यही स्थिति है। मैं चाहूंगा कि वित्त मंत्री जी आप अधिकार तो ले लीजिये संसद से, हमें इसे देने में कोई एतराज नहीं है, । हमें भरोसा है, पूरा विश्वास है कि यह सरकार पैसे का दुरुपयोग नहीं करेगी लेकिन इसके साथ-साथ मैं यह प्रार्थना भी करूंगा कि इन पैसों का उपयोग बाढ़ पीड़ितों के लिये करें। आप इसके लिये बाढ़ नियंत्रण कमीशन भी बैठा सकते हैं या पार्लियामेंट के सदस्यों की एक कमेटी बना सकते हैं जो इसका दौरा करके इस समस्या का हल ढूंढ़ सकती है, हम मानते है प्रधान मंत्री जी दीन-दुखियों से हमदर्दी रखती है इसीलिए मैं उनसे रिक्वेस्ट करूंगा कि समय निकाल कर एक-आध रोज के लिये वहां का दौरा कर लें, वहां का क्या दृश्य है, क्या हो रहा है वह देख ले, और इसके लिये एक स्थायी निदान ढूंढ़ लें कि किस पानी का इस तरह से दुरुपयोग हो रहा है उसका सही उपयोग किस ढंग से हो। आप जानते हैं देश में एक से एक बड़ी-बड़ी योजनायें बन रही हैं। साथ ही जो पानी बेकार जा रहा है उसके लिये एक योजना आप बना लें जिससे गांव वालों का भी भला हो और योजना बन कर जो चीज तैयार होगी उससे जनता का भी भला हो। आपको इसके लिये कोई रास्ता ढूंढ़ना ही चाहिये। आखिर हम इसको कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे। इससे करोड़ों लोग परेशान हैं, अरबों रुपयों का नुकसान होता रहा है, जान का, माल का हर तरह का नुकसान हो रहा है।

उपसभापति जी, यह ठीक है यहां बाढ़ के ऊपर चर्चा नहीं हो रही है लेकिन मैंने जानबूझ कर इस बात को कहा है। मैंने मंत्री जी से भी कहा था कि बाढ़ के ऊपर चर्चा होनी चाहिये इसलिये मुझे यह बात कहनी पड़ी। अंत में मैं मंत्री जी से यही कहना चाहूंगा कि हम लोग इस विधेयक का स्वागत करते हैं और मैं आशा करता हूं कि जो कानून बनाया जा रहा है और सौ रुपये से ऊपर के सिक्के निकालने की जो सरकार की योजना है, उसका हम स्वागत करते हैं। मैं फिर आशा करता हूं कि इन नये सिक्कों का उपयोग अधिक से अधिक बाढ़ पीड़ितों के लिए किया जाएगा।

श्री उपसभापति : क्या आप चाहते हैं कि सरकार के पास जो पुराने सिक्के हैं उनका उपयोग बाढ़ पीड़ितों के लिए न किया जाय और सिर्फ नये सिक्कों का ही इस काम के लिए उपयोग किया जाय ?

श्री गुणानन्द ठाकुर : हम तो यह चाहते है कि सरकार के पास जो भी रुपया है उसका उपयोग बाढ़ पीड़ितों के लिए किया जाय। सरकार के सामने बहुत सी-कठिनाइयां भी हो सकती हैं, लेकिन सरकार बाढ़ पीड़ितों के मामले को प्राथमिकता दे। इन शब्दों के साथ जो बिल सदन के सामने लाया गया है उसका मैं स्वागत करता हूं।

श्री सिकन्दर अली वज्द (महाराष्ट्र) : आली जनाब डिप्टी चयरमैन साहब, मैं इस बिल की ताईद करता हूं, लेकिन इसके सिलसिले में चन्द जरूरी बातों की तरफ फाइनेन्स मिनिस्टर की तवज्जह दिलाना चाहता हूं। हमारे मुल्क में दो हजार बरस से चांदी, सोने और कांसे के सिक्के ढलते रहे हैं। ये सिक्के उमदा, खूबसूरत और पायदार हैं। मुसलमानों के जमाने में सैकड़ों टक्सालों के अन्दर सोने और चांदी के सिक्के ढला करते थे और ये सिक्के उमदा होते थे। उस जमाने के सिक्के आज भी

बेहतरीन माने जाते हैं और हालत यह है कि उन सिक्कों की जो असली कीमत है उससे दस गुनी ज्यादा कीमत पर आज वे सिक्के खरीदे जाते हैं और रखे जाते हैं। चूंकि सिक्कों से मुझे भी खास दिलचस्पी है, इसलिए मैं फाइनेन्स मिनिस्टर की तवज्जह इन बातों की तरफ दिलाना चाहता हूं। मेरे एक दोस्त ने कहा था कि आप इतने रुपये देकर पुराने सिक्के क्यों खरीदते हैं? मैंने उनसे कहा कि भाई, नये सिक्के मेरे हाथ में ज्यादा ठहरते नहीं है। पुराने सिक्के बाजार में चलते नहीं है, घर में रहते हैं। इसलिए मैं पुराने सिक्के खरीदता हूं। हमारे मुल्क की आजादी के बाद बहुत से सिक्के बने हैं और खासतौर पर यादगारी सिक्के जिनको Commemoration सिक्के कहते हैं वह भी बने हैं। पंडित जी का सिक्का बना है, लेकिन वह एक ऐसा सिक्का है जो टकसाल से निकलते ही पुराना हो गया। अफसोस की बात तो यह है कि हमारे मुल्क में जबकि हजारों साल के पुराने सिक्के बेहतरीन हालत में अभी भी मौजूद हैं लेकिन यह बात हमारी समझ में नहीं आई कि हमारे मुल्क के अन्दर कैसे मिन्ट मास्टर हैं कि जिनका ढाला हुआ पंडित जी का सिक्का टकसाल से निकलते ही पुराना हो गया। मेरे पास इस वक्त दो हजार साल पुराना सिक्का मौजूद है जो एलेक्जेन्डर के जमाने का है और जिस पर अपोलो की तस्वीर बनी हुई है। आज भी यह ऐसा मालूम होता है गोया अभी टकसाल से ढल कर निकला है। यह सिलवर का सिक्का है। हमारे यहां भी कुछ यादगारी सिक्के निकाले गये जैसे ग्रो मोर फूड और आजादी, इंडिपेंडिन्स के सिक्के कुछ सिक्के तो इस तरह के होते हैं कि वह बाजार में चलते हैं और कुछ सिक्के इस तरह के होते हैं कि लोग उनको जमा करते हैं। मैं यह भी कहूंगा कि गांधी जी का सिक्का बेहतर बना था। असल में सिक्के तीन किस्म के होते हैं। एक तो वह सिक्के होते हैं जो बाजार में चलते हैं, जैसे एक रुपये का सिक्का है। एक वह सिक्का है जो अनसरकुलेटड कोईन कहलाता है। उसको शौकीन लोग जमा करते हैं और ये टकसाल से मिलते हैं। इनके अलावा वह सिक्के होते हैं जो (Proof) प्रूफ कोइन्स कहलाते हैं। गांधी जी के आम सिक्के की कीमत 10 रु० है तो गान्धी-प्रुफ कोइन की कीमत बाजार में 200 रु० होगी। इस तरह के सिक्कों का एक्सपोर्ट भी होता है।

तो मैं फाइनेंस मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि बम्बई से गांधी जी के प्रूफ कोईन हजारों अमेरिका भेजे गये थे, लेकिन शिकागो में वह नापसन्द किये गये। मैं यह चाहूंगा कि यह बता दिया जाय कि यहां से अन-सर्कुलेटेड कोईन कितने बाहर गये, किस किस कीमत के बाहर गये? गांधी जी के प्रूफ कोईन जो आपने खुद बाहर भेजे थे, उनमें से कितने वापस आये और उनकी क्या लागत आई थी? इस पर हिन्दुस्तान का कितना खर्चा हुआ था?

यह एक अजीब बात है कि इस मुल्क में जितना आर्ट, स्कलपचर (Art Sculpture) और पेंटिंग्स का (Paintings) का खजाना है दुनिया के किसी मुल्क में इतना खजाना नहीं है, लेकिन हमारे कोईनों पर, हमारे नोटों पर, इसका कोई इजहार नहीं होता। कुछ पहिले के जो हमारे नोट और सिक्के बने हैं उनमें किसी तरह का आर्ट वगैरह का ख्याल नहीं किया गया था, मगर इधर नोट खूबसूरत बने हैं। हमारे सिक्कों में नटराज और दूसरे मुजस्समों की तस्वीरें नहीं आई हैं हालांकि ऐसे सिक्कों की दुनिया में बहुत मांग है। ऐसे लोग जो अजन्ता, एलोरा और सारनाथ जाते हैं हमसे पूछते हैं कि आपके सिक्कों पर वहां की तस्वीरें क्यों नहीं होतीं? ऐसा मालूम होता है कि सेक्रेटेरियट में कोई सेक्रेटरी किसी कमर्शियल आर्टिस्ट से डिजाइन बनवा लेता है। हमारे मिन्ट मास्टरों को कम से कम इतना तो मालूम होगा कि हमारे मुल्क में कई आर्टस के नमूने मौजूद हैं जिनको सिक्कों पर छापा जा सकता है ताकि दुनिया में यहां के सिक्कों को पसन्द किया जाय। हमारी पार्लियामेंट के मेम्बरों के लिए कम से कम हमारे म्यूजियमों में बेहतरीन सिक्कों का जो खजाना है, उसकी एग्जीबिशन की जाय ताकि हमको आइडिया हो जाय कि पहिले हमारे यहां कैसे सिक्के बनते थे और अब कैसे सिक्के बन रहे हैं? हमारे सिक्कों में आम तौर पर इलस्ट्रेशन होता है। कहीं एक औरत और दो बच्चे झन्डे लिए हुए हैं। इससे ज्यादा अच्छा सिम्बल होना चाहिए। ग्रो मोर फूड के

[श्री सिकन्दर अली वज्द]

मुताल्लिक एक सिक्का बनाया गया था जिसमें गेहूं की बालियां दिखलाई गई हैं इससे ज्यादा उसमें हम कुछ नहीं पाते। मुगलिया जमाने के जो सिक्के हैं वह बहुत अच्छे हैं। उन पर मिन्ट का नाम, सन् और बादशाह का नाम लिखा होता है और वह सिक्का किस इलाके की फतह की यादगार में निकाला गया है, उसका जिक्र भी फारसी में लिखा रहता है। इस तरह सिक्के से जाहिर होता है कि यह सिक्का किसी हिस्टोरिकल वाकये की यादगार में बनाया गया है। बाज सिक्कों पर तो शेर भी लिखे रहते हैं।

एक माननीय सदस्य : आप भी एक-आध शेर सुनाइये।

श्री सिकन्दर अली वज्द : उनमें जो शेर लिखे रहते हैं वह फारसी में है। इस तरह के कायन्स पहिले जमानों में बन चुके हैं, लेकिन हमारे सिक्के इस तरह के नहीं बनाये गये हैं। हिन्दुस्तान में जो सिक्के बनते हैं उनमें देवनागरी में लिखा होता है कि इतनी कीमत का है, इसके साथ ही साथ अंग्रेजी में भी यही लिखा होता है। यह जो अरेबिक न्यूमरल्स हैं, यह हिन्दुस्तान ही के हैं और यहां से अरब मुल्कों में गए और फिर वहां से सारे यूरोप के मुल्कों में फैल गए। यह हिन्दुस्तान की अपनी चीज है। हम यह चाहते हैं कि जो आप हजार रुपये का सिक्का बना रहे हैं, वह तो सोने का बनेगा। हम चाहते हैं कि इसमें सिर्फ न्यूमरल्स अंग्रेजी में लिखे जाएं और लेटर्स देवनागरी में ही लिखे जावें, अंग्रेजी में कोई लेटर्स इसमें न लिखा जाये। दुनिया के किसी भी मुल्क में चाहे वह रूस हो, चाहे जर्मनी हो, उनके सिक्कों में अंग्रेजी में कुछ नहीं लिखा जाता। अगर देवनागरी में ही लेटर्स लिखे जायेंगे तो सिक्के में काफी जगह मिल जायेगी और उस जगह में हम अपने आर्ट का कमाल दिखला सकते हैं। जिस तरह

1 P.M.

चीनी, अरबी और फारसी के सिक्कों में लैटरिंग में कमाल दिखलाया जाता है, उसी तरह हमारे यहां जो बेहतरीन माहरीन हैं उनको दावत दी जानी चाहिए ताकि वह भी इस तरह का सिक्का बनायें। पहले मुख्तलिफ आर्टिस्ट नमूने पेश करते थे। एक सिक्का लिखने या डिजाइन करने के लिए जागीरें मिलती थीं। पता नहीं आपने कितनों को जागीरें बांटी या इनाम दिए। अब जागीरें बांटने का जमाना नहीं है।

श्री चक्रपाणि शुक्ल : आप नमूना दे दीजिए, आपको जागीर मिल जायगी।

श्री सिकन्दर अली वज्द : यहीं बहुत से नमूने मिल जायेंगे, म्यूजियम में बहुत से नमूने हैं। मैं अर्ज कर रहा था कि सिक्कों में खूबसूरती आनी चाहिए, अंग्रेजी के हरूफ सिक्के से निकालने चाहिएं। मैं अंग्रेजी का दुश्मन नहीं हूं, लेकिन अंग्रेजी हर्फों से जगह बाकी नहीं रहती। एक तरफ ((Emblem) देवनागरी में लिखिए, एक तरफ हमारा एम्बलम रखिए। फिर सिक्के का हुस्न देखिए। सिक्का तो तारीख का एक जुज है। महमूद गजनवी के सिक्के हमारे म्यूजियम में हैं। उनमें एक तरफ निहायत खूबसूरती से अरबी में कलमा लिखा हुआ है, लेकिन दूसरी तरफ कलमें का संस्कृत में तरजुमा है, देवनागरी स्क्रिप्ट में है। मुहम्मद गौरी के सिक्के पर एक तरफ अरबी इबारत में हैं और दूसरी तरफ देवनागरी में हैं। अल्तमश के सिक्कों पर भी इसी तरह एक तरफ देवनागरी इबारत लिखा हुआ है। अब तो हमारी कौमी जबान हिन्दी है।

श्री चक्रपाणि शुक्ल : एक कमेटी बना दी जाये।

श्री सिकन्दर अली वज्द : उस कमेटी के सदर आप होना चाहेंगे ?

श्री चक्रपाणि शुक्ल : आपकी चेयरमैनशिप में।

श्री खुरशीद आलम खान : मेम्बर बहुत से लोग होना चाहेंगे।

श्री उपसभापति : अब आप लंच के बाद बोलिए।

श्री सिकन्दर अली वज्द : जिक्र जब छिड़ गया कयामत का, बात जा पहुंची तेरी जवानी तक। यह बहस तो मेरी दिलचस्पी की है। अगर आपका इरशाद है तो लंच के बाद कहूं नहीं तो अभी खत्म कर दूं।

श्री उपसभापति : लंच के बाद। (*Interruptions*)

श्री सिकन्दर अली वज्द : हैदराबाद के सिक्के सबसे अच्छे होते थे। उनमें तस्वीर नहीं होती थी इसलिए लैटरिंग की गुंजाइश बहुत होती थी। वहां

के सोने के सिक्के की मार्केट में दस गुना कीमत मिलती है। जो एक हजार का सिक्का आप बना रहे हैं वह इन्फ्लेशन रोकने की भी अच्छी तरकीब है। हजार रुपये का रेडियो नहीं लिया, सिक्का ही रख लिया, खूबसूरती के लिए रख लिया।

और भी सजेशन्स मुझे देने हैं।

श्री उपसभापति : अब आप लंच के बाद सजेशन्स दें

The House stands adjourned till 3.00P.M. today.

The House then adjourned for lunch at four minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at one minute past three of the clock.

[Mr. Deputy Chariman in the chair]

THE INDIAN COINAGE (AMENDMENT) BILL, 1975—Contd.

श्री सिकन्दर अली वज्द : आली जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, यह जो हमारे यहां हजार रुपये का क्वायन ढल रहा हैउसके बारे में मैं फाइनेंस मिनिस्टर साहब और फाइनेंस के महकमे को इस तरफ मुतवज्जह करना चाहता हूं कि कम्पलसरी सेविंग्स के सिलसिले में जहां और इन्तजाम किये जा रहे हैं वहां अगर आप यह सिक्का सोने का ढाल दें तो हम जरूर इस कम्पलसरी सेविंग्स में शरकत करेंगे। उसमें शर्त सिर्फ इतनी है कि जैसा हम कह रहे हैं एक खूबसूरत और उम्दा क्वायन हमको मिलना चाहिए। अभी कुछ दोस्तों ने पूछा था कि क्वायन पर शेर कैसे लिखा जाता था? अकबर ने जब इलाहाबाद को फतेह किया था तो इस इलाहाबाद के क्वायन्स पर यह शेर लिखा गया था :

हमेशा चून जरें खुर्शीदो माह रायज बाद
ब अर्बों जर्क जहान सिक्कए अलाहाबाद

यानी हमेशा चांद और सूरज की तरह यह इलाहाबाद का सिक्का चमकता रहे और रिवाज पाता रहे। और वह अभी तक चमक रहा है चूंकि वह बीमेन्स इयर है इसलिये इस सिलसिले में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। रोम में कुछ मेडिल मिन्ट हुए हैं और यहां आये हैं। मालूम नहीं, फाइनेंस मिनिस्टर साहब ने और फाइनेंस डिपार्टमेन्ट वालों ने उनको देखा है या नहीं। उनमें जहां और लेडीज की तस्वीरों का इन्तखाब हुआ है वहां इन्दिरा जी की तस्वीर का भी इन्तखाब हुआ है। जो एक मेडिल (Bronze) ब्रौंज का है वह तो बहुत ही आला दर्जे का है। उसकी जो खूबसूरती और टेक्नीक है, जो उसकी नफासत है वह हमारे क्वायन बनाने वालों को दिखाना चाहिए। मैं चाहता हूं कि उसे आप देखें कि उसमें एक-एक बात कैसे दिखायी गयी है। ऐसा ही एक निकिल का मेडिल है। छोटे से क्वायन में भी तस्वीर साफ आई है। खूबसूरती के लिए किसी क्वायन का बड़ा होना ही काफी नहीं है, उसके लिए आर्टिस्टिक अप्रोच होना चाहिए। क्वायन बनाने में स्कल्पचर, पेन्टर और एंग्रेवर तीनों के आर्ट की जरूरत होती है। मैं जब पार्लियामेन्ट में आया तो एक बहुत पुराने पार्लियामेन्टेरियन साहब से मिला। जैसे राज्य सभा में राजू साहब हैं। मैंने कहा कि आप तो बहुत पापुलर थे, इसका क्या राज है? तो उन्होंने जवाब दिया कि जिस सब्जेक्ट को तुम जानते हो उस पर पार्लियामेन्ट में कभी बात न करो। लोग बहुत परेशान होते हैं कि यह किस तरह की बातें कह रहा है, वह उनकी समझ में नहीं आती। तुम जो सब्जेक्ट नहीं जानते उसके बारे में जोर से बात करो तो लोग यह समझेंगे कि हमसे तो यह कम ही जानता है। लेकिन मैंने उनकी बात नहीं मानी और यहां उर्दू के बारे में तकरीरें की हैं। चूंकि अब अपने हाथ में हजार रुपये का सोने का सिक्का आने वाला है इसलिये मैं यह सब कह रहा हूं। मैं तो कांसे और चांदी के क्वायन जमा करता हूं। अभी हमारे पार्लियामेन्ट के मिनिस्टर साहब यह कह गये हैं कि वह एक अच्छा बिल ला रहे हैं। उस वक्त तक मैं आपके सामने कुछ अपने मालूमात का इजहार करता रहूं ताकि ज्यों ही बिल आ जाए मैं अशर्फियां और चांदी के सिक्कों का सन्दूक बन्द कर दूं और दूसरे सिक्कों का यहां पर जिक्र शुरू हो जाए।

जहांगीर के सोने के सिक्के में नूरजहां का जिक्र यूं आया है :